ओ३म्

वैदिक संस्कृति का उद्घोषक

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 17 अंक 52 कुल पृष्ठ-8 17 से 23 मार्च, 2022 दयानन्दाब्द 198 सृष्टि सम्वत् 1960853122 सम्वत् 2078 फा.शु.-14

गुरुकुल झज्जर (हरि.) के वार्षिक समारोह में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का ओजस्वी उद्बोधन

महर्षि दयानन्द जी की विचारधारा वेद पर आधारित है

– स्वामी आर्यवेश

गुरुकुल शिक्षा प्रणाली ही भारत को विश्वगुरु की प्रतिष्ठा दिला सकती है – स्वामी प्रणवानन्द

आर्य समाज संगठित होकर सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध संघर्ष करे – आचार्य विजयपाल

नशाखोरी के विरुद्ध एक जंग और लड़नी पड़ेगी – स्वामी रामवेश

आर्य समाज के प्रसिद्ध गुरुकुल झज्जर (हरियाणा) का वार्षिक समारोह भव्यता के साथ आयोजित किया गया। इस अवसर पर 5 मार्च, 2022 को समारोह के उद्घाटन सत्र में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के अतिरिक्त, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती अध्यक्ष श्रीमद्दयानन्द वैदिक गुरुकुल परिषद्, स्वामी रामवेश जी अध्यक्ष नशाबन्दी समिति, हरियाणा, स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती सांसद सीकर, राजस्थान, स्वामी विश्वानन्द गुरुकुल नंगला मदोड़, मुजफ्फरनगर, स्वामी सुखानन्द कन्या गुरुकुल फतूही, गंगानगर, राजस्थान, डॉ. महावीर मीमांसक दिल्ली, डॉ. आनन्द कुमार सेवानिवृत्त आई.पी.एस., श्री रामपाल शास्त्री कार्यकारी अध्यक्ष मानव सेवा प्रतिष्ठान दिल्ली, श्री चन्द्रदेव शास्त्री अध्यक्ष मानव सेवा प्रतिष्ठान, दिल्ली, डॉ. अमरजीत शास्त्री धर्माचार्य आर्य समाज न्यूयार्क, श्री सत्यवीर सिंह शास्त्री पूर्व मंत्री आर्य प्रतिनिधि सभा हरियाणा आदि संन्यासी एवं विद्वान् सम्मिलित हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता गुरुकुल के प्रधान श्री पूर्ण सिंह देशवाल एवं मंच का कुशल एवं सफल संचालन गुरुकुल के मंत्री श्री राजवीर छिकारा ने किया। श्री कुंवर भूपेन्द्र सिंह आर्य की भजन मंडली ने भी कार्यक्रम की शोभा बढ़ाई। गुरुकुल कार्यकारिणी की ओर से स्वामी आर्यवेश जी एवं अन्य विशिष्ट अतिथियों का स्वागत किया गया तथा उन्हें स्मृति चिन्ह एवं ओ३म् पट्ट भेंट किये गये।

इस अवसर उद्बोधन देते हुए सार्वदेशिक सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द की विचारधारा को वेद पर आधारित बताया। उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द जी ने अपना जीवन वैदिक सिद्धान्तों के प्रचार–प्रसार को समर्पित किया था। स्वामी दयानन्द जी ने जीवन भर कभी वेद विरुद्ध मान्यताओं एवं सिद्धान्तों के साथ समझौता नहीं किया। स्वामी दयानन्द जी ने बड़े–बड़े प्रलोभन ठुकराकर पूरे विश्व को वेदों की ओर लौटने का आह्वान किया और वेद भाष्य का सही रास्ता दिखाया। स्वामी दयानन्द जी ने सभी सामाजिक कुरीतियों, धार्मिक अन्धविश्वास एवं अवैदिक मान्यताओं को चुनौती देकर पूरी मानवता को एक सूत्र में पिरोने की पहल की। उन्होंने आर्य समाज की स्थापना करके वैदिक मान्यताओं के प्रचार का मार्ग प्रशस्त किया। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज के संगठन के सम्बन्ध में विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि यदि आर्य समाज संगठित हो जाये तो किसी भी सरकार को अपनी मांगों के सामने झुकाया जा सकता है। आज हम नशाबन्दी के लिए एवं गुरुकुल शिक्षा प्रणाली आदि महत्त्वपूर्ण विषयों के लिए मांग रखते हैं तो सरकार के कान पर जूं तक नहीं रेंगती, क्योंकि आर्य समाज संगठन विभिन्न गुटों में बिखरा हुआ है। जिससे वर्तमान की यह माँग है कि आर्य समाज के सभी गुट परस्पर मतभेद भुलाकर संगठित हों और विभिन्न समस्याओं के समाधान के लिए राष्ट्रव्यापी अभियान प्रारम्भ करें। गुरुकुल झज्जर के आचार्य विजयपाल जी ने भी आर्य समाज को संगठित करने के लिए अपना योगदान देने की घोषणा की और संगठन के महत्त्व पर प्रकाश डाला।

स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी ने गुरुकुल शिक्षा प्रणाली को भारत के भविष्य के लिए अत्यन्त आवश्यक बताया और कहा कि गुरुकुल शिक्षा प्रणाली से ही भारत विश्व गुरु का दर्जा प्राप्त कर सकता है।

स्वामी रामवेश जी ने नशाखोरी के विरुद्ध फिर से जंग शुरू करने का आह्वान किया और उन्होंने कहा कि शराब और अन्य नशीले पदार्थों के बढ़ते प्रचलन से देश का युवावर्ग, किसान व मजदूर तथा महिलाएँ सर्वाधिक प्रभावित हो रहे हैं। अतः देश में पूर्ण नशाबन्दी लागू होनी चाहिए। कार्यक्रम में उपस्थित महानुभावों का डॉ. राजकुमार शास्त्री ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम अत्यन्त सफल रहा।

सम्पादक - प्रो. विट्ठलराव आर्य

धैर्य : धर्म का प्रवेश द्वार

– आचार्य चंद्रशेखर शास्त्री

धृतिः क्षमा दमोऽस्तेयं शौचं इन्द्रियनिग्रहः । धीर्विद्या सत्यं अक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम् ।।

पहला लक्षण – सदा धैर्य रखना, दूसरा –(क्षमा) जो कि निन्दा–स्तुति मान–अपमान, हानि–लाभ आदि दुःखों में भी सहनशील रहना; तीसरा – (दम) मन को सदा धर्म में प्रवृत्त कर अधर्म से रोक देना अर्थात् अधर्म करने की इच्छा भी न उठे, चैथा – चोरीत्याग अर्थात् बिना आज्ञा वा छल–कपट, विश्वास–घात वा किसी व्यवहार तथा वेदविरूद्ध उपदेश से पर–पदार्थ का ग्रहण करना, चोरी और इसको छोड देना साहुकारी कहाती है, पांचवां–राग –द्वेष पक्षपात छोड़ के भीतर और जल, मृत्तिका, मार्जन आदि से बाहर की पवित्रता रखनी, छठा–अधर्माचरणों से रोक के इन्द्रियों को धर्म ही में सदा चलाना, सातवां–मादकद्रव्य बुद्धिनाशक अन्य पदार्थ, दुष्टों का संग, आलस्य, प्रमाद आदि को छोड़ के श्रेष्ठ पदार्थों का सेवन, सत्पुरूषों का संग, योगाभ्यास से बुद्धि बढाना; आठवां – (विद्या) पृथिवी से लेके परमेश्वर पर्यन्त यथार्थ ज्ञान और उनसे यथायोग्य उपकार लेना; सत्य जैसा आत्मा में वैसा मन में, जैसा वाणी में वैसा कर्म में वर्तना इससे विपरीत अविद्या है, नववां – (सत्य) जो पदार्थ जैसा हो उसको वैसा ही समझना, वैसा ही बोलना, वैसा ही करना भी; तथा दशवां – (अक्रोध) क्रोधादि दोषों को छोड़ के शान्त्यादि गुणों का ग्रहण करना धर्म का लक्षण है।

धर्म का पहला लक्षण धृति या धैर्य है।

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।

यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ प्रकृतिसिद्धमिदमं हि महात्मनाम्।

विपत्ति में धीरज, उन्नति में क्षमा, सभा में वाक् चातुर्य, युद्ध में पराक्रम, यश में रुचि और वेद में आसक्ति–यही महात्माओं के गुण होते हैं।

ऋषि दयानंद सरस्वती ने भी प्रार्थना का अर्थ करते हुए लिखा है पूर्ण पुरुषार्थ के पश्चात सहाय के लिए ईश्वर से प्रार्थना या याचना करना प्रार्थना है। आजकल सारी दुनिया डिप्रेशन और तनाव से घिरी हुई है। धर्म का मार्ग छोड़ने के कारण व्यक्ति बीमार हो रहा है। मैं कहता हूं जिसके जीवन में पेशेंस नहीं है वह पेशेंट बन जाता है। अगर आपको पेशेंट नहीं बनना है पेशंस रखिए।

मैं अपने विदेश प्रवास के दौरान ह्यूस्टन में था वहां पर एमडी एंडरसन कैंसर हॉस्पिटल है। वहां डॉक्टरों से जब मेरी चर्चा हुई तो उन्हें नई बात मुझे बताएं कि रिसर्च यह कहता है की कि तनाव लेने से व्यक्ति कैंसर का मरीज बनता जा रहा है। कैंसर के अनेक कारण हैं किंतु उनमें से एक प्रमुख कारण यह है कि व्यक्ति आज तनावग्रस्त है।

एक बड़ा वैज्ञानिक नास्तिक था। उसने बड़े–बड़े परीक्षण किए बड़े–बड़े खोज की और वह लोगों को सिखाता था तो समझाता था बताता था कि दुनिया में ईश्वर नहीं है और ईश्वर की हमें कोई जरूरत नहीं। उसने अपने केबिन में भी लिखवा दिया था बेडरूम में लिखवा दिया था कि गॉड इस नो हियर। जब उसकी मृत्यु होने लगी तब उसे जो अनुभव हुआ उसने अपने सहयोगी को बुलाया और कहा इस वाक्य को सुधार दीजिए और लिखिए गॉड इज नॉऊ हियर। मरता हुआ व्यक्ति कभी झूठ नहीं बोलता। सच जानना हो तो कभी मरते हुए व्यक्ति के पास बैठिए। मरता हुआ व्यक्ति झूठ नहीं बोलता। इसीलिए शरशैया में लेटे भीष्म से पांडवों ने उपदेश प्राप्त किया था। मरणासन्न रावण से राम और लक्ष्मण ने उपदेश प्राप्त किया था।

मुझे एक प्रसंग भी याद आता है धर्म के संबंध में। एक सन्यासी दान मांग रहे थे। अचानक उन्हें विश्राम करने के लिए स्थान ढूंढना पड़ा था रात होने लगी थी। उन्होंने उनके शिष्यों ने देखा कि सामने एक बड़ी धर्मशाला है वह धर्मशाला में प्रविष्ट हुए और वहां के सेवक से उन्होंने निवेदन किया कि आज रात्रि विश्राम करने के लिए उन्हें जगह दी जाए। सेवक ने कहा यहां कमरे तो है 10 कमरे हैं और सभी खाली हैं लेकिन हम आपको भी ठहरा नहीं सकते आपको इसके लिए प्रबंधक से अनुमति लेनी पड़ेगी। यह सुनकर के उस संत ने जो बात कही वह हम सब को ध्यान रखनी चाहिए। धर्मशाला इसका नाम लिखा आपने। सच्चाई यह है कि यहां शाला तो है, कमरे तो हैं, 10 कमरे हैं बड़े–बड़े भवन बने हैं। शाला मतलब मकान या घर। किंतु इस शाला में धर्म नहीं है। इस बात को पकड़िए नाम जरूर धर्मशाला है लेकिन धर्म का भाव नहीं है परोपकार का भाव नहीं है तो धर्मशाला में धर्म नहीं होता।

हमारे जीवन में बदलाव इसलिए नहीं आ पाता क्योंकि हम बोलना तो जानते हैं किंतु करना नहीं जानते । जीवन करने से बदलता है बोलने से नहीं ।

हम देवता ना बने कोई गम नहीं हम असुर ना बने यह भी कोई कम नहीं।

दूसरों के लिए न जिएं कोई गम नहीं।

दूसरों को जीने दे यह भी कोई कम नहीं।

धर्म हीनता का दुख

धर्म ही मनुष्य को मनुष्य बनाता है। आचार्य चाणक्य कहते हैं –

आहारनिद्राभायमैथुनं च सामान्यमेतत्पशुभिर्नराणाम्।

धर्मो हि तेषामधिको विशेषो धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः।।

इस श्लोक के माध्यम से चाणक्य कहते हैं कि भोजन करना, नींद लेना, भयभीत होना और संतान उत्पत्ति करना, ये चार बातें मनुष्य और पशु में एक जैसी होती हैं. मनुष्य में और पशुओं में केवल धर्म का भेद है। यह एक मात्र ऐसी विशेष चीज है जो मनुष्य को पशु से अलग बनाती है। जिस मनुष्य में धर्म नहीं है वह पशु के समान है।

आप सब लोग चिंतन कीजिए कि 50 साल पहले की दुनिया कैसी थी। नोट पहले ज्यादा थे या अब ज्यादा है। मकान पहले ज्यादा था अब ज्यादा है। गाड़ियां पहले ज्यादा थी अब ज्यादा है। व्यक्ति पहले ज्यादा सुखी था या अब ज्यादा सुखी है। पहले घर छोटा था और एक ही घर में संयुक्त परिवार में भाई चाचा ताऊ दादा दादी भाई भतीजे सब पल जाते थे। आज हम दो हमारे दो वाला युग है। और इस युग में दो बच्चों को दो अलग–अलग कमरे चाहिए। फेसबुक मेमोरी 4000 दोस्त हैं लेकिन सच्चा एक दोस्त भी नहीं है अनुग्रह मंहगी दवाई है लेकिन सेहत नहीं है ज्ञान है लेकिन अक्ल नहीं है। डनलप के गद्दे हैं लेकिन नींद नहीं है। सामने छप्पन भोग है लेकिन भूख नहीं है। इस विडंबना को समझने की जरूरत है यह समझ में आएगा तभी व्यक्ति सुखी हो पाएगा। मनुस्मृति में सत्य को धर्म का लक्षण बताया गया है। शास्त्र कारों में सत्य को स्वर्ग की सीढ़ी बताया है।

जहां क्रोध है वहां बोध नहीं।

धर्म किसे समझ नहीं आता

शास्त्रकार कहते हैं कि 10 लोगों को धर्म समझ नहीं आता ।

मत्तः प्रमत्तः उन्मत्तः श्रान्तः क्रुद्धः बुभुक्षितः।

त्वरमाणश्च लुब्धश्च भीतः कामी च ते दश।।

मद्य पीया हुआ, नशे या घमंड में चूर, उन्मत्त (पागल), थका हुआ, क्रोधी, डरपोक, भूखा, त्वरित, लोभी, और विषयलंपट – ये दस धर्म को नहीं जानते ।

इस प्रकार के 10 लोगों को धर्म समझाने की चेष्टा नहीं करनी चाहिए।

अब तो आंदोलन कोई ऐसा चलाया जाए,

इंसान को इंसान बनाया जाए।
आदमी के बीच हो रिश्ते ऐसे,
मैं हूं भूखा तो तुझसे भी खाया न जाए।।

– संपादक, अध्यात्म पथ
फ्लैट नं – सी 1, पूर्ति अपार्टमेंट
, एफ– ब्लॉक, विकासपुरी, नई दिल्ली –110018
मो – 9810084806

मन के जीते जीत, मन के हारे हार.....।

- बाबूराम शर्मा विभाकर

मन है, मन है, मन है, मन है,
मन में बैठा अर्न्तमन है।
मन ही तन का राजा होता
मन से ही चलता जीवन है।1।

मन ने कहा कि ऊपर उड़ चल,
तब मैं उड़ा गगन में ऊपर।
तभी बनाया वायुयान को
देखा गर्व सहित फिर भू पर।

लोहे की पटरी पर चलने
वाली मन ने रेल बना दी।
बिजली का निर्माण कराकर
जग मग रोशनियाँ चमका दी।

टेलीफोन, रेडियो, टी.वी.,
मोटर-कार, फिल्में, साईकिल
सबका आविष्कारक मन है
ये सब सुख के अच्छे सम्बल।

मन का ही सब खेल तमाशा
इच्छाओं का जुड़ता मेला।
मन में यदि संकल्प हंसेगा
दुनिया में होता रंगरेला।

देखो मानव के मन में ही,
बैठा कलाकार सुन्दरतम्।
पशु-पक्षी में नहीं, इसी में
सृजन-शक्ति होती है अनुपम।

मन ही सपनों के चित्रों को
सो जाने पर दिखलाता है।
कभी हंसी के, कभी भयंकर
दृश्यों को लेकर आता है।

मन की गति का पार नहीं है,
इससे सभी यंत्र हारे हैं।
क्षण में चन्द्रलोक में जाता,
ठाठ बड़े इसके न्यारे हैं।

शुभ संकल्प विचारों का मन,
हर इक मन को हर लेता है।
गाँधी, गौतम, दयानन्द सा
महापुरुष बनवा देता है।

मन पर भ्रष्ट आवरण जब हो,
तब तो सर्वनाश होता है।
मन में संयम रमा हुआ तो,
जीवन को क्योंकर खोता है।

मन से जुड़ा बुद्धि का नाता,
यान सुरक्षित है जीवन का।
होता तब प्रकाश विचार का,
रूप उजल जाता तब मन का।

सुन्दरता को देखे आँखें,
आँखों के पीछे भी मन है।
मीठे गीत सुनो, रीझो तुम,
उनके भी पीछे यह मन है।

मन में बुरी कामना हो तो,
मन सबसे लड़वाता फिरता।
मन में मधुर भावना हो तो,
सबको गले लगाता फिलता।

मन तो निर्देशक जैसा है
खेल दिखाता, रंग जमाता।
दुनिया के मोहक मेले में,
ले जाकर हमको भरमाता।

मन के हारे हार हुई है,
मन के जीते जीत सदा है।
मन को मिला नहीं करता कुछ,
मन से यदि संकल्प विदा है।

मन में लगी हुई है खिड़की,
बाहर झांको, भीतर झांकों।
दुनिया को जानों कैसी है,
अपने को भी देखो जाँचो।

- 52/2, लाल क्वाटर, गाजियाबाद (उत्तर प्रदेश)

दूरदर्शन विज्ञापन और समाज

– प्रा. मेजर डॉ. नारायण राऊत

मनुष्य सजीव प्राणी है। आज रोटी, कपड़ा और मकान की भांति 'जनसंचार' भी मनुष्य की मूलभूत जरूरत बन गई है। इनकी आपूर्ति हेतु मनुष्य ने नये–नये साधनों का आविष्कार किया है। जनसंचार को परिभाषित करते हुए कहा गया है कि, 'जब हम किसी भाव, विचार या जानकारी को दूसरों तक पहुँचाते हैं और वह प्रक्रिया सामूहिक पैमाने पर होती है, वह जनसंचार कहलाती है।

संचार के इसी स्वरूप को विविध माध्यमों द्वारा लोगों तक पहुँचाने का कार्य आज तक हुआ है, जिसमें संकेत बोली, चित्र, चित्रांकन, चित्रभाषा, लिपिपत्र, सूचना पत्र, पुस्तक, समाचार पत्र, सिनेमा, रेडियो, दूरदर्शन, कम्प्यूटर, सैटेलाईट, नेटवर्क, लैपटॉप आदि विविध माध्यम प्रचलित हैं। 'दूरदर्शन' जनसंचार का सबसे तेज और प्रभावशाली इलेक्ट्रोनिक दृकश्राव्य माध्यम है।

दूरदर्शन का आविष्कार एल. बेयर्ड ने सन् 1925 ई. में किया। सन् 1936 को लंदन में बी. बी. सी. द्वारा टी. वी. का प्रसारण शुरू हुआ। भारत में 15 सितम्बर, 1959 को राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी के हाथों टी. वी. का उद्घाटन हुआ। प्रारम्भी स्कूली शिक्षा एवं ग्रामीणों के विकास के लिए उसका उपयोग किया गया लेकिन बाद में लोकरुचि को ध्यान में रखकर इसके विविध कार्यक्रम दिखाने शुरू हुए जो बहुत ही प्रसिद्ध हुए। इसकी वजह यह थी कि इन कार्यक्रमों का प्रसारण करने के लिए बड़ी–बड़ी कम्पनियों और उनके विज्ञापन थे। जो प्रायोजक थे। आज इन विज्ञापनों ने तो बाजार में हंगामा मचा रखा है। क्या है ये विज्ञापन?

'विज्ञापन वाणिज्कि एवं व्यावसायिक क्षेत्र का ऐसा अंग है, जो प्रतिष्ठान के प्रति जनमत तैयार करने में सर्वाधिक उपयोगी है। अंग्रेजी के 'एडवरटाइजिंग' का हिन्दी पर्याय है। जिसका अर्थ है। ज्ञात कराना अथवा सूचना देना है। पाश्चात्य विद्वान् फ्रैंक प्रेस्बी के अनुसार 'विज्ञापन मुद्रित, लिखित, उच्चरित अथवा चित्रित विक्रय कला है। पाश्चात्य व्यंग्यकार ब्रिट के अनुसार बिना विज्ञापन व्यापार करना किसी खूबसूरत लड़की को अन्धेरे में मुँह चिढ़ाना। तुम तो जानते हो कि उस समय तुम क्या कर रहे हो, पर दूसरा कोई नहीं जानता।' सी बर्टैव्ह आर, केनफिल्ड एवं एच फ्रेचरमूर के अनुसार 'विज्ञापन लोकहित के प्रोत्साहन के लिए किया जाता है, अतः वह लोक सेवा है।'

स्पष्ट है कि विज्ञापन एक कला है, जिसका उद्देश्य अपनी बात का भुगतान देकर प्रचार–प्रसार करना तथा जन समाज तक अपनी बात पहुँचाकर अपनी वस्तु की खपत बढ़ाना है।

आरम्भ में दूरदर्शन का उद्देश्य जनशिक्षण, छात्रों के लिए शिक्षा सामग्री एवं सूचनाओं का प्रसारण करना अर्थात् आदमी को इन्सान बनाना है। परन्तु ऐसा हुआ नहीं। इस सम्बन्ध में सुधी पचौरी लिखते हैं कि, 'टी. वी. पर हम लोग शुरू हुआ था परिवार नियोजन, मद्यनिषेध की जनशिक्षा के लिए किन्तु खत्म हुआ दादा–दादी के तीर्थाटन में। ये 'जो है जिन्दगी' और 'खानदान' जैसे सीरियल किसी ऐसी उमंग की पैदाइश थे, जिसमें दूरदर्शन को गम्भीरता से ले लिया गया था और कुछ सिरफिरे जनता को शिक्षा देने की प्रगतिशील बातों के लायक थे। चूँकि वे प्रगतिशील थे, इसलिए उन्हें यह मालूम ही नहीं पड़ा कि जिसे वे जनशिक्षा कह रहे हैं, वह प्रायोजकों, विज्ञापनदाताओं और उद्योगपतियों का संयुक्त कारोबार है और उसे लोगों को जूते खरीदने, साड़ी धोने, मैगी खाने, दाँत चमकाने, घर में ट्यूब बल्ब लगाने, प्रेशर कुकर की सीटी बजाने, सिरदर्द की गोली खाने और निरोध के फायदे बताने में काम आना है। आगे रामायण, महाभारत, चाणक्य, भारत एक खोज आदि सीरियलों में विज्ञापन दाताओं ने सरकार को काफी राजस्व दिया और यह सिलसिला चलता रहा। प्रायोजकों से जुड़े विज्ञापनदाताओं और व्यापारियों के हाथों में भारतीय संस्कृति और सभ्यता, इतिहास और परम्पराएँ प्रदर्शित करने का हक दिया और विज्ञापन एजेन्सियों ने दूरदर्शन को विज्ञापनदर्शक बना दिया।

स्पष्ट है, विज्ञापन और दूरदर्शन संचार के दोनों माध्यम बहुत ही प्रभावशाली हैं। जो समाज–सुधार और मानव मूल्यों को विकसित करने में सहायता प्रदान करते हैं। परन्तु आधुनिक इलेक्ट्रानिक मीडिया ने अपने मूल उद्देश्यों को दूर रखकर इसे केवल पैसा कमाने का एक जरिया बनाया है और समाज को ऐसी दुनिया का सपना दिखाया जो वास्तविकता से कोसों दूर है। असलियत को बता देने के बजाय जो न हो उसे विज्ञापन में दिखाया जा रहा है। इसलिए नकली चीजों का विज्ञापन तगड़ा हो गया और समाज उसे असली समझकर घर में लाने लगा। क्या यह समाज का शोषण नहीं, अब यह शोषण न केवल वस्तु तक सीमित रहा बल्कि सामाजिक गतिविधियों, धार्मिक अनुष्ठान और मानवीस जीवन मूल्यों को भी इसने घसीटा है। डॉ. लक्ष्मीकान्त पाण्डेय लिखते हैं कि, 'विज्ञापन हमारी संवेदना, संस्कृति, सभ्यता, आदर्श की बलि चढ़ा रहे हैं।

ऐसी बाजारू बिकाऊ संस्कृति को जन्म दे रहा है कि इसमें मूल्य नैतिकता आदि की कोई पूछ नहीं रह जायेगी। बस, अजब बाजार बनकर रह जायेगी दुनिया।' ऐसी स्थिति में संचार के सारे माध्यम आज पूँजी के हाथ खिलौने भर होकर रह गये हैं। इससे जनता को भ्रमित करके अधिकतम लाभ कमाने हेतु अन्धकार में भी रखा जा रहा है। दूरदर्शन विज्ञापन ने जो हंगामा मचाया है मानो वह भारतीय संस्कृति, सभ्यता और नैतिक मूल्यों की धज्जियाँ उड़ा रहा है और केवल वणिकवृत्ति को भोगना चाहता है।

आज टी. वी. विज्ञापन ने नारी देह को पूरा नंगा कर दिया है, जिसे घर में परिवार के साथ बैठकर देखने में शर्म सी महसूस होती है। यह देह प्रदर्शन हमारी संस्कृति और सभ्यता के बिल्कुल विपरीत है। फिर भी टी. वी. वाले इसे प्रसारित करते हैं। दुःख की बात यह है कि इन विज्ञापनों का विरोध भी कोई करता नहीं है, 'सेंसर बोर्ड व सरकारी नियमों के बावजूद विज्ञापन वाले अपना रास्ता निकाल लेते हैं और नियम कानूनों के तहत सरकार कुछ नहीं कर पाती।' मॅकडॉनल्ड, बेगपायपर, डिप्लोमेट, रॉयल चैलेंजर, सिग्नेचर जैसी कम्पनियों ने हिन्दी की सुप्रसिद्ध अभिनेत्रियों के हाथों में बोटल और ग्लास तो दिया साथ ही उसे अर्द्धनग्न भी किया और उसके मुख से ये संवाद जो अश्लील अन्दाज में बरगलाये हैं। देखें एक हिरोईन कहती है, 'डिप्लोमेट जहाँ नजर आये, दिल मचल जाये। दूसरी कहती है, डिप्लोमेट मर्दाना पैमाना है।' तीसरी कहती है, व्हाट मेक्स वी माई च्वाइस इज हिच च्वाइस–डिप्लोमेट। इन विज्ञापनों का वही अर्थ लिया गया जो विज्ञापनदाता चाहता था। यानि कि सुन्दर नारी को मर्दानगी प्यारी होती है और वह आयेगी डिप्लोमेट पीने से। है ना मूर्खता? मैं पूछता हूँ क्या दूध, दही, मक्खन, घी खाने वाले मर्द नहीं होते? सच तो यह है कि घी वीर्यवर्द्धक है। लेकिन विज्ञापनकर्ता को इससे क्या लेना–देना, वह पैसा कमाना चाहता है। लेकिन समाज शराब की ओर झुक जाता है वह व्यक्ति ही नहीं उसका पूरा परिवार तबाह हो जाता है। इसे कौन समझावे? सरकार को तो शराब उद्योग से सबसे ज्यादा राजस्व मिलता है। ऐसा ही राजस्व सरकार को देने वाला एक और विज्ञापन है देखें धूम्रपान। 'चारमीनार पीजिए, चुस्ती पाइए', 'विल्स का एक कश लीजिए दिनभर की खुशियाँ पाइये। क्या सचमुच धूम्रपान करने से चुस्ती, खुशियाँ आती हैं? वैज्ञानिक इशारा करता है कि धूम्रपान करना शरीर की हानि है। तम्बाकू, सुर्ती, गुटका जैसी चीजों का सेवन करना कैंसर को दावत देनाहै। फिर भी इन चीजों का विज्ञापन करने वाली एजेन्सियाँ जोरों में विज्ञापन कर रही हैं। पान पराग के विज्ञापन को देखें जहाँ शादी–ब्याह का माहौल है, खाना बरातियों ने खा लिया है इतने में एक हसीना हाथ में पान पराग का डिब्बा पेश करती है और बाराती उसे बड़े चाव से खाते दिखते हैं। इसी तरह सिने अभिनेता संजय दत्त हाथ में पान सितारा गुटका लेकर कहता है, 'पान सितारा के साथ जीने का मजा लो' माणिकचन्द गुटका 'ऊँचे लोग, ऊँची पसन्द' ऐसे अनगिनत विज्ञापन ग्राहकों को आकर्षित करते हैं, लेकिन इससे सामाजिक हानि कितनी होती है। इस पर एक नजर डालें तो पता चलेगा कि आज भारत में मरने वालों में सबसे अधिक कैंसर से पीड़ित लोग हैं, जो धूम्रपान सेवन करते हैं। इससे देश कमजोर हो जाता है। शक्तिहीन होता है। क्षण भर का नशा, जीवन की दुर्दशा है।

टी. वी. विज्ञापनों में टूथपेस्ट के विज्ञापनों ने इतना हंगामा मचाया हुआ है कि लोग कौन सा टूथपेस्ट इस्तेमाल करें? चूँकि हर एक टूथपेस्ट निर्माता अपने विज्ञापन द्वारा उसकी विशेषताओं को इस प्रकार प्रसारित करता है कि लोगों ने वही टूथपेस्ट लेना उनके दाँतों की सुरक्षा है। जैसे झागवाला, तवंगतेलवाला, मीस्वावाला, नमकवाला, बबूल की मजबूतीवाला, कीटाणु का खात्मा करने वाला, दाँतों की सफेदी वाला, चमकवाला, अब .... ब..... इतनी टूथपेस्ट अब इसमें हम किसे च्वाइस करें? अब विज्ञापनकर्ता हसीन खूबसूरत मॉडल का सहारा लेता है, जिसके दाँत सफेद चमकने वाले होते हैं। उसके मुस्कुराने पर दाँतों की सफेदी पर फिदा हुआ युवक क्लोजअप हो जाता है। एक और नमक वाला विज्ञापन देखें, जहाँ हसीना का सुन्दरता और बालों का रखरखाव देखकर आकर्षित होता है, उसमें वह खो जाता है लेकिन जैसे ही चॉकलेट खाने पर दाँतों में दर्द से परेशान होता है तो वही हसीना अपने खूबसूरत बालों का विग फेंक देती है और पूछती है, क्या आपके दाँतों में दर्द है? नहीं? आपके लिए लाये हैं कोलगेट का नया नमकवाला टूथपेस्ट। ये दोनों विज्ञापन विसंगत भी लगते हैं। यह सब बकवास है। जनता की जेब से पैसा निकालना एकमात्र उद्देश्य है।

बालों की सुन्दरता, मजबूती और चमक के लिए भी अनेक शैम्पू और साबुन हैं। विज्ञापनकर्ता फिल्मी नायिकाओं को लम्बे घने बालों की विग लगाकर शैम्पू से धोते हुए बाल दिखाता है, जबकि वास्तविकता कुछ और ही होती है। इससे लाभ तो कम हानि बहुत होती है कि स्त्रियों के बाल तो झड़ जाते हैं। वैसे विसंगति तो यही है कि चाहे बिपाशा बसु हों या शिल्पा शेट्टी मूलतः उनके बाल उतने लम्बे हैं ही नहीं लेकिन विज्ञापनकर्ता लम्बे बताता है और शैम्पू को आपके घर में पहुँचा ही देता है। साबुन की बात करें तो, साबुन हमारे प्रत्येक अंग के लिए स्वतंत्र है। चेहरे का, बदन का, हाथ पैर का, पता नहीं कितने साबुन के विज्ञापन हैं? यदि हम एक–एक खरीदना चाहें तो बिल कितना होगा? परन्तु विज्ञापनकर्ता ऐश्वर्या बच्चन के खूबसूरत चेहरे का सहारा लेते हैं, वह यहीं पर रूकता नहीं उसके पति अभिषेक बच्चन के हाथ में सोने का सिक्का थमाते हुए प्रलोभन भी देता है कि आप लक्स खरीदें और सोने जैसी बीबी के साथ–साथ सोने का सिक्का पाइये। ऐसे प्रलोभन और झूठेपन पर आम जनता बली हो जाती है? क्या यह समाज का शोषण नहीं है? हाँ है।

दूरदर्शन के विज्ञापन का सबसे बुरा असर बच्चों पर पड़ता है। टी. वी. के कारण बच्चों पर होने वाले बुरे असर को स्पष्ट करते हुए प्रो. होल्जगर का कहना है कि अतिदर्शन से बच्चों की आँखों पर जोर पड़ता है और उसकी नींद उचट सकती है और दूरदर्शन से चिपटे रहने के कारण उनमें लोक व्यवहार भी समाप्त हो जाता है। लेकिन इन बातों पर कौन ध्यान देगा? वहाँ विज्ञापनकर्ता एक से बढ़कर एक विज्ञापन बनाता है, उसे केवल पैसा पाना है। उस चीज से बच्चों को फायदा है या नहीं उससे उसे कुछ लेना–देना नहीं। उदाहरण देखें एक ओर चॉकलेट का विज्ञापन दिखाकर उकसाता है, वहीं दूसरे विज्ञापन में कहता है कि मीठा खाने से दाँतों पर बुरा असर होता है, तो आपके लाडले को चाहिए पेप्सोडेण्ट टूथपेस्ट। यदि दाँत ठीक न हुए तो अस्पताल जाइये और दाँत निकाल दीजिए। सड़े हुए दाँत शरीर को हानि पहुँचाते हैं। अर्थात् फायदा कम नुकसान ज्यादा वाली बात है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि दूरदर्शन के विज्ञापन मनुष्य जीवन को नुकसान ज्यादा पहुँचाते हैं। ऐसा नहीं है कुछ ऐसे भी विज्ञापन हैं जो देशहित, देश रक्षा, समाज प्रबोधन, मानवीय जीवन मूल्यों की रक्षा, एकता और अखण्डता का संदेश देकर, देशवासियों को जगाने का उत्तमोत्तम कार्य करते हैं। 'ओगिलवी माथेर' नामक एक विदेशी एजेन्सी ने मिले सुर मेरा तुम्हारा तो सुर बने हमारा' वाला विज्ञापन राष्ट्रीय एकता का सुर अलाप रहा है, तो कैंसर से बचने के लिए सिगरेट की मनाही का विज्ञापन जन जागृति कर रहा है, जैसे एक–एक सिगरेट को जलाकर कहा है किश्तों में मौत का विज्ञापन, बीड़ी पीने वाले एक–एक करके खांसते हैं और दूसरी बार उनका फोटो दीवार पर टंग जाता है, जिससे लोग बीड़ी पीने से कतराते हैं का विज्ञापन। दारू पीकर ट्रक चलाने वाले ड्राइवर का विज्ञापन अपघात को बुलावा और मौत। ये सारे विज्ञापन समाज को जगाने का काम करते हैं। ऐसे अनेक विज्ञापन हैं, जो समाज सुधार, जन जागृति की दृष्टि से प्रसारित होते हैं। लेकिन बहुत कम।

निष्कर्ष : स्पष्ट है दूरदर्शन संचार का सबसे ज्यादा प्रभावशाली माध्यम है। इस पर प्रसारित होने वाले विज्ञापन उतने ही महत्त्वपूर्ण एवं प्रभावशाली हैं, जो समाज पर अपनी अमिट छाप डालते हैं। जितने येटी. वी. विज्ञापन समाज को सुधारने के लिए और समाज का द्रुतगति से विकास हो इस दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं। उतने टी. वी. विज्ञापन समाज के लिए घातक भी हैं और मानवीय जीवन मूल्यों का ह्रास होने की दृष्टि से नुकसानदेह भी है। डॉ. लक्ष्मीकान्त वार्ष्णेय के अनुसार विज्ञापन हमारी संवेदना, संस्कृति सभ्यता आदर्श की बलि चढ़ा रहे हैं। ऐसी बाजारू विकाऊ संस्कृति को जन्म दे रहा है कि इसमें मूल्य नैतिकता आदि की कोई पूछ नहीं रह जायेगी।

टी. वी. विज्ञापन के प्रसारण से विकास भले हुआ हो (भलाई की दृष्टि से) लेकिन उससे जो हानि हो रही है उसकी तरफ देखने को किसी को फुर्सत नहीं है। न सरकार को, न देशवासियों को। किन्तु इसके दुष्परिणाम भयंकर हो सकते हैं। पाश्चात्य देशों में जो वातावरण आया है और जो नैतिकता उन्होंने खो दी है उसे देखते हुए काश हम सुधर जायें अन्यथा दुष्यन्त कुमार के एक शेर की भांति हमारा अन्त ना हो।

बाढ़ की सम्भावनाएँ सामने हैं और नदियों के किनारे घर बने हैं। देखना है इस घर का होता क्या है?

●

आर्य समाज के नेता श्री बिरजानन्द एडवोकेट के दौहित्र कुंवर भानू प्रताप सिंह का जन्मोत्सव

27 फरवरी, 2022 को उनके निवास खेतड़ी, जिला–झुन्झुनू, राजस्थान में यज्ञ एवं उपदेश के साथ मनाया गया

अनेक गणमान्य महानुभावों ने यज्ञ में सम्मिलित होकर बच्चे को आशीर्वाद दिया

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का संस्कारों पर प्रभावशाली प्रवचन तथा श्री धर्मवीर आर्य, बहरोड़ द्वारा यज्ञ का संचालन किया गया

गत् 27 फरवरी, 2022 को आर्य प्रतिनिधि सभा राजस्थान के प्रधान श्री बिरजानन्द एडवोकेट के दौहित्र कुंवर भानू प्रताप सिंह का जन्मोत्सव खेतड़ी, झुंझुनू में हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम भी विशेष रूप से रखा गया था। जिसमें सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का मनुष्य जीवन में संस्कारों के महत्त्व पर प्रभावशाली प्रवचन हुआ। यज्ञ का संचालन बहरोड़ से पधारे श्री धर्मवीर आर्य तथा यज्ञ की व्यवस्था दिल्ली से पधारे श्री धर्मेन्द्र आर्य ने संभाली।

विदित हो कि श्री बिरजानन्द जी की छोटी बेटी गायत्री आर्या की ससुराल खेतड़ी में है और उनके पति श्री विजयपाल सिंह एडवोकेट तथा उनके ससुर श्री रामचन्द्र यादव एडवोकेट का स्थाई निवास खेतड़ी में है। अतः श्री बिरजानन्द जी से विचार–विमर्श करने के उपरान्त श्री रामचन्द्र यादव एडवोकेट ने अपने पौत्र कुंवर भानू प्रताप सिंह का जन्मदिन अपने निवास स्थान खेतड़ी में मनाने का निश्चय किया जो 27 फरवरी, 2022 को भव्यता के साथ सम्पन्न हुआ।

श्री रामचन्द्र यादव एडवोकेट तथा श्री बिरजानन्द एडवोकेट ने अपने सभी मित्रों एवं साथियों को इस अवसर पर आमंत्रित किया था और सैकड़ों गणामान्य लोग इस जन्मोत्सव के समारोह में सम्मिलित हुए थे। सम्मिलित होने वाले महानुभावों में सर्वश्री गजानन्द यादव एडवोकेट जयपुर हाई कोर्ट राजस्थान, श्री चिरंजीलाल यादव, श्री नन्दराम ओला पूर्व प्रधान पंचायत समिति बहरोड़, श्री राजाराम यादव पूर्व अध्यक्ष राजस्थान शिक्षक संघ, श्री किरोणीमल यादव सेवानिवृत्त कानूनगो बहरोड़, श्री नरेन्द्र शर्मा सरपंच, श्री अजीत सिंह यादव सरपंच, श्री रमेश यादव, श्री देवेन्द्र गैस एजेंसी नारनौल, श्री राम निवास पूर्व अध्यक्ष हरियाणा आर्य युवक परिषद्, डॉ. बस्तीराम यादव अलवर, श्री राजपाल यादव नीम का थाना, बिरजानन्द जी की बड़ी बेटी प्रेम यादव एडवोकेट नीम का थाना आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

यज्ञ के उपरान्त सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने संस्कारों के सम्बन्ध में प्रभावशाली प्रवचन देकर सभी को अपने परिवारों में बच्चों को संस्कारित करने के लिए गम्भीरता से दायित्व निभाने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि संस्कार विहीन मनुष्य कभी भी जिन्दगी में उन्नति नहीं कर सकता, वह कभी भी भटकाव तथा पतन की ओर जा सकता है। जन्मदिन मनाना भी एक विशेष प्रेरणा देने वाला कार्य है, क्योंकि जिसका जन्मदिन मनाया जाता है उसे उपदेश तथा आशीर्वाद के द्वारा उत्साहित किया जाता है तो वह स्वाभाविक रूप से अपने जीवन को उन उपदेशों के अनुरूप ढालने का प्रयत्न करता है। आज जन्मदिन मनाने की परम्परा बड़ी विकृत हो चुकी है। लोग जन्मदिन के नाम पर केक काटते हैं और मोमबत्तियाँ जलाकर उन्हें बुझाते हैं। भारतीय संस्कृति में सदैव तमसो मा ज्योर्तिमयगमय अर्थात् अन्धकार से प्रकाश की ओर जाने की प्रेरणा दी जाती है पर वर्तमान में मोमबत्ती बुझाकर प्रकाश से अंधेरे की तरफ जाने की प्रेरणा दी जाती है। यह कैसी विडम्बना है कि हमलोग बिना सोचे समझे अन्ध परम्पराओं को ढोते रहते हैं। जिनका कोई अर्थ नहीं निकलता, बल्कि गलत अर्थ निकलता है। अतः आज भानू का जीवन पूर्ण वैदिक रीति से यज्ञ के द्वारा मनाया गया है। यह सर्वोत्तम परम्परा है और भारतीय संस्कृति की रक्षा का उपाय भी है। स्वामी जी ने बताया कि जब इस बालक का नामकरण संस्कार हुआ तब भी मैं यहां हमारे साथी श्री रामचन्द्र यादव एडवोकेट के निमंत्रण पर आया था और मैंने इसका नाम कुंवर भानू प्रताप सिंह रखा था। इसके पीछे मेरा तर्क एवं भावना यह थी कि बच्चे का नाम सार्थक और प्रभावशाली होना चाहिए जिसका उसके व्यक्तित्व पर विशेष प्रभाव पड़ता है। आजकल लोग छोटे–छोटे नाम रख देते हैं जो व्यक्तित्व को परिलक्षित नहीं करते, प्रेरित नहीं करते। अतः यह नाम भी सोच कर रखा गया था और भानू प्रताप सिंह एक बहुत ही बुद्धिमान और तेजस्वी बालक है। हर बात पर प्रश्न उठाना, टिप्पणी करना और अपनी प्रतिक्रिया करना इसकी विशेषता है। इसलिए आज भानू ने जो यज्ञ के द्वारा जन्मदिन बनाने का निश्चय किया, इसकी जितनी प्रशंसा की जाये उतना कम है। यह उसका स्वयं का निर्णय है। जबकि इसके बराबर के बच्चे गुब्बारे फोड़ने, केक काटने और मोमबत्तियाँ बुझाने की निरर्थक बातों में उलझे रहते हैं। जिसकी भानू ने कोई परवाह नहीं किया और निश्चय किया कि मैं अपना जन्मदिन यज्ञ से मनाऊँगा। सभी बच्चों को भानू से प्रेरणा लेनी चाहिए। उनके दादा जी, नाना जी, माता–पिता आदि से प्रेरणा लेनी चाहिए और बच्चों के जन्मदिन यज्ञ एवं वैदिक विधि से मनाने चाहिए। उनके सभी संस्कार ठीक समय पर करने चाहिए। संस्कारों के बिना बच्चे ऐसे रह जाते हैं जैसे बेलगाम घोड़े। स्वामी जी ने अनेक उदाहरण देकर उपस्थित महिलाओं तथा पुरुषों को अपनी जिम्मेदारी का एहसास कराया और कहा कि बच्चों को समय देना, संस्कारित करना और उनकी सावधानी पूर्वक देखभाल करना अत्यन्त आवश्यक है, नहीं तो भविष्य में पश्चाताप के अलावा कुछ हाथ नहीं लगेगा।

यज्ञ के आचार्य श्री धर्मवीर आर्य ने भी अपने मुखारबिन्दु से भानू तथा समस्त परिवारजनों को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएँ दी। यज्ञ के उपरान्त प्रीति भोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी। श्री रामचन्द्र यादव एडवोकेट ने सभी का धन्यवाद ज्ञापित किया और आभार जताया।

आर्य केन्द्रीय सभा, मेरठ के तत्वावधान में आयोजित महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के जन्म दिवस समारोह में

26 फरवरी, 2022 को आर्य समाज थापरनगर, मेरठ में सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी रहे मुख्य अतिथि

महर्षि दयानन्द स्वतंत्रता आन्दोलन के सूत्रधार थे – स्वामी आर्यवेश

आर्य केन्द्रीय सभा, मेरठ के तत्वावधान में 26 फरवरी से 1 मार्च, 2022 शिवरात्रि तक महर्षि दयानन्द जी के जन्मोत्सव का कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी 26 फरवरी, 2022 को सम्मिलित हुए और अपना ओजस्वी उद्बोधन देकर आर्यजनों को प्रोत्साहित किया।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि स्वामी दयानन्द सरस्वती स्वतंत्रता आन्दोलन के प्रणेता थे। उन्होंने ही सभी क्रांतिकारियों को प्रेरित कर स्वतंत्रता आन्दोलन के लिए तैयार किया। स्वामी दयानन्द जी के परम शिष्य श्यामजी कृष्ण वर्मा, स्वामी श्रद्धानन्द जी, लाला लाजपत राय, राम प्रसाद बिस्मिल, शहीद भगत सिंह आदि क्रांतिकारियों ने आजादी के लिए अपना बलिदान दिया। सन् 1857 की क्रांति असफल हो जाने के पश्चात् स्वामी दयानन्द तथा उनके गुरु स्वामी बिरजानन्द जी ने निराश हुए भारतीयों के हृदयों में फिर से आजादी के आन्दोलन की ज्योति जलाई। स्वामी बिरजानन्द जी ने स्थान–स्थान पर बड़ी पंचायतें एवं बैठकें करके लोगों को तैयार किया और स्वामी दयानन्द सरस्वती जी ने तीन वर्ष तक भूमिगत रहकर आजादी के आन्दोलन की भूमिका तैयार की। दुर्भाग्य की बात है कि आजादी के 75 वर्ष पूरे होने पर देश में मनाये जा रहे अमृत महोत्सव में महर्षि दयानन्द के योगदान की पूरी तरह से उपेक्षा की जा रही है। हजारों कार्यक्रम अमृत महोत्सव के सरकारें तथा विभिन्न संगठन आयोजित कर चुके हैं किन्तु किसी ने भी महर्षि दयानन्द और आर्य समाज की स्वतंत्रता आन्दोलन में भूमिका एवं योगदान की चर्चा नहीं की जाती। केन्द्र सरकार के माथे पर यह न मिटने वाला एक धब्बा है जो महर्षि दयानन्द जी की ऐतिहासिक भूमिका एवं योगदान की अनदेखी की जा रही है। वोट की राजनीति करने वाली पार्टियाँ स्वामी दयानन्द जी की उपेक्षा करने में अपनी कुशलता मानते हैं। किन्तु आर्यों को इस षड्यन्त्र को समझने की आवश्यकता है। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्यजनों का आह्वान किया कि आप किसी भी पार्टी के साथ जुड़े हों, किन्तु आपके लिए महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वैदिक सिद्धान्त प्राथमिक होने चाहिए। यदि कोई इनके विरुद्ध षड्यन्त्र या उपेक्षा करता है तो उसका विरोध होना चाहिए।

आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान डॉ. आर. पी. सिंह चौधरी, मंत्री श्री राजेश सेठी जी तथा कोषाध्यक्ष श्री सुनील आर्य जी ने स्वामी आर्यवेश जी का जोरदार स्वागत किया। कार्यक्रम में दिल्ली से पधारे आचार्य प्रणव प्रकाश शास्त्री का प्रवचन तथा युवा भजनोपदेशक श्री अजय आर्य के भजनों का भी कार्यक्रम रहा। कार्यक्रम के अन्त में सभी ने मिलकर प्रीति भोज किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री सोहन वीर आर्य तथा मंच का संचालन श्री चन्द्रकान्त ने किया। रात्रि का सहभोज श्रीमती अर्पणा तथा श्री अरविन्द कुमार के सौजन्य से हुआ। इस कार्यक्रम में आर्य समाज थापरनगर के मंत्री श्री मनीष शर्मा, प्रधान श्री कैलाश सोनी, कोषाध्यक्ष भानू बत्रा तथा स्त्री आर्य समाज थापरनगर की मंत्राणि श्रीमती प्रीति सेठी, कोषाध्यक्षा श्रीमती शोभा मलिक आदि ने व्यवस्था में विशेष सहयोग दिया। इस अवसर पर स्वामी ब्रह्मानन्द सरस्वती, श्री प्रभात पंत, छपरौली के कार्यकारी प्रधान श्री धर्मेन्द्र आर्य जी के अतिरिक्त अन्य महानुभाव भी उपस्थित रहे।

आर्य समाज, शहीदनगर, भुवनेश्वर, उड़ीसा का वार्षिक समारोह भव्यता के साथ सम्पन्न

आदिवासी क्षेत्रों में आर्य समाज को और अधिक सक्रिय होकर कार्य करना चाहिए – स्वामी आर्यवेश

वैदिक साहित्य को उड़िया भाषा में प्रकाशित करना आवश्यक है – प्रियव्रत दास इंजीनियर

परोपकार तथा सेवा ही मेरे जीवन का लक्ष्य है – स्वामी व्रतानन्द

आर्य समाज, शहीदनगर, भुवनेश्वर, उड़ीसा का वार्षिक समारोह दिनांक 5 से 7 मार्च, 2022 की तिथियों में भव्यता के साथ हुआ सम्पन्न। इस अवसर पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी मुख्य अतिथि के रूप में पधारे। उनके अतिरिक्त तपोनिष्ठ संन्यासी विख्यात वैद्य स्वामी व्रतानन्द जी महाराज, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री विनय आर्य, आचार्य वासुदेव व्रती, आचार्य सुदर्शन व्रती, स्वामी अभेदानन्द जी, श्री योगेन्द्र उपाध्याय, डॉ. संजय भाई शाह आदि संन्यासी एवं विद्वान् कार्यक्रम में सम्मिलित हुए।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक सिद्धान्तों को पूरे विश्व के लिए उपयोगी एवं स्वीकार्य बताया। उन्होंने कहा कि वेद में किसी भी प्रकार की संकीर्णता नहीं है। वेद ईश्वरीय ज्ञान है तथा मानव मात्र के कल्याण के लिए समान ज्ञान प्रदान करता है। उन्होंने विभिन्न मत–सम्प्रदायों को समय–समय पर मनुष्यों के द्वारा स्थापित की गई साम्प्रदायिक संस्थाएँ बताते हुए कहा कि महाभारत से पूर्व वर्तमान के समय सेमेटिक रिलीजन नहीं थे। केवल वेद एवं वैदिक मान्यताओं का प्रचलन ही पूरे विश्व में था। उड़ीसा के आदिवासी क्षेत्रों में विभिन्न प्रकार के प्रलोभन देकर गरीब आदिवासी लोगों का धर्म परिवर्तन कराया जाता है जो गलत है। आर्य समाज को आदिवासी क्षेत्र में सेवा एवं परोपकार के कार्य और अधिक सक्रियता के साथ करने चाहिए तथा लोगों को वैदिक मान्यताओं से अवगत कराना चाहिए। उड़ीसा प्रान्त सांस्कृतिक दृष्टि से एक सम्पन्न प्रदेश है। यहाँ के लोगों प्रतिभा सम्पन्न हैं। अतः उड़ीसा में सघन कार्य किया जाये तो उसके दूरगामी परिणाम बहुत प्रभावशाली होंगे। स्वामी जी ने कहा कि उड़ीसा में स्वामी धर्मानन्द जी सरस्वती, स्वामी व्रतानन्द जी सरस्वती व अन्य आर्य संन्यासियों के द्वारा किये जा रहे कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय हैं। यहाँ की आर्य प्रतिनिधि सभा को पूरे प्रदेश में जन–चेतना यात्राओं के द्वारा सामाजिक कुरीतियों के विरुद्ध प्रचार करना चाहिए। स्वामी आर्यवेश जी ने आर्य समाज शहीदनगर के प्रधान और लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् पं. प्रियव्रत दास इंजीनियर द्वारा लेखन के क्षेत्र में किये गये कार्यों की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर में आर्य समाज का यह भव्य केन्द्र बनाकर इन्होंने ऐतिहासिक कार्य किया है। पं. प्रियव्रत दास जी के सुपुत्र एवं सुपुत्रियाँ तथा उनकी धर्मपत्नी माता सन्नो देवी आर्य समाज की विचारधारा से ओत–प्रोत हैं। उनके जीवन में आर्यत्व की भावनाएँ कूट–कूट कर भरी हुई हैं।

स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक मान्यताओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि त्रैतवाद (ईश्वर, जीव प्रकृति), कर्मफल, पुर्नजन्म, अमैथुनी सृष्टि, पंचमहायज्ञ, सोलह संस्कार, अष्टांग योग, गणित ज्योतिष, वर्णाश्रम व्यवस्था, आर्ष शिक्षा आदि को जन–जन तक पहुँचाने के लिए नवयुवक आर्य समाज में दीक्षित हों तथा प्रचार के कार्य में अपना समय लगायें। आर्य समाज अवतारवाद, फलित ज्योतिष, राशि फल, जादू–टोना, भूत–प्रेत, झाड़–फूंक, तंत्र–मंत्र, डाकनी–साकनी, गंडे–ताबीज, बीज मंत्र, पशु बलि, मूर्ति पूजा, मृतक श्राद्ध आदि को वेद विरुद्ध मानता है और समाज को अन्धकार की ओर ले जाने का कारण मानता है।

कर्मफल पर बोलते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि वैदिक मान्यता के अनुसार अवश्यमेव भोक्तव्यं कृतं कर्म शुभाशुभम्। अर्थात् किये हुए शुभ या अशुभ कर्म का फल अवश्य ही भोगना पड़ता है। उन्होंने यह भी कहा कि वर्तमान समय में बड़े–बड़े कथित धर्मगुरुओं एवं धर्माचार्यों ने किये हुए पाप कर्मों का फल माफ हो सकता है कहकर लोगों को बुराई, भ्रष्टाचार और पतन की ओर जाने के लिए मार्ग प्रशस्त किया। जब धर्म के ठेकेदार अपने भक्तों को या आम लोगों को इस बात की गारण्टी देने लग जायें कि तुम्हारे किये हुए पाप कर्मों का फल वे भगवान से सिफारित करके माफ करवा देंगे तो कोई भी पाप कर्म करने से क्यों परहेज करेगा। उसे यह विश्वास रहेगा कि मेरे पाप कर्मों का फल अपने धर्मगुरुओं को भेंट पूजा देकर उनकी सिफारिश से माफ करवा लूँगा। यह एक विडम्बना है कि बड़े–बड़े पदों पर बैठे लोग, पढ़े–लिखे व धन–सम्पन्न लोग ही ऐसी कपोल–कल्पित बातों को मानते हैं और भ्रष्टाचार तथा पाप करने से नहीं डरते। स्वामी जी ने कहा कि कर्म फल में किसी प्रकार का गणित नहीं लगाया जा सकता, क्योंकि अच्छे कर्म अच्छे हैं और बुरे कर्म बुरे हैं। कोई यह कहे कि मेरे अच्छे कर्म अधिक हैं और उसमें से बुरे कर्म घटा दिये जायें तो जो अच्छे कर्म बचेंगे उसी से मेरा कल्याण हो जायेगा और मैं बुरे कर्मों के फल से बच जाऊँगा। यह बात तो ऐसी ही हुई जैसे कोई यह कहे कि 20 गायों में से 10 गधे घटा देंगे तो कितनी गायें बचेंगी। आप स्वयं समझ सकते हैं कि गायों में से गधे कैसे घटेंगे। गाय, गाय रहेंगी और गधे, गधे रहेंगे। इसी प्रकार अच्छे कर्म अच्छे रहेंगे और बुरे कर्म बुरे रहेंगे इनको आपस में घटाया नहीं जा सकता। और इनके फल अवश्य ही भोगने पड़ेंगे। इनको माफ भी नहीं करवाया जा सकता। स्वामी आर्यवेश जी के सिद्धान्तों से ओत–प्रोत व्याख्यानों को श्रोताओं ने मंत्र मुग्ध होकर सुनें। आर्य समाज शहीदनगर की ओर से स्वामी आर्यवेश जी का सार्वजनिक अभिनन्दन भी किया गया।

अपने उद्‌बोधन में स्वामी व्रतानन्द जी ने बताया कि उन्होंने व्याकरण, संस्कृत साहित्य एवं वैदिक सिद्धान्तों का गहन अध्ययन किया किन्तु मनुष्य जीवन का उद्देश्य परोपकार एवं सेवा को ही बनाया। वैद्यज्ञ क्षेत्र में कार्य करते हुए उन्होंने हजारों आदिवासियों को निःशुल्क स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराकर अपने संकल्प को पूरा किया है। गुरुकुल आमसेना में प्रतिवर्ष निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर आयोजित किये जाते हैं जिसमें डॉ. संजय भाई शाह के नेतृत्व में योग्य विशेषज्ञ डॉक्टरों की टीम अहमदाबाद से आकर गरीब लोगों के ऑपरेशन निःशुल्क करते हैं। स्वामी जी ने घोषित किया मेरे जीवन का लक्ष्य परोपकार तथा सेवा है। उन्होंने बताया कि पिछले 4–5 दिन से लगभग 7 हजार किलोमीटर की यात्रा करके वे पूर्वांचल के नागालैण्ड से यहाँ पर पहुँचे हैं। नागालैण्ड और आसाम में जहाँ ईसाईयों का बोलबाला है वहाँ हमने गुरुकुल खोल रखे हैं जिसमें नागालैण्ड के ही बच्चे शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं।

श्री विनय आर्य ने आर्य समाज की भावी योजनाओं पर प्रकाश डाला और आर्यजनों से अपील की कि वे आधुनिक तकनीक का प्रचार में लाभ उठायें और आर्य समाज की विचारधारा को जन–जन तक पहुँचाने का कार्य करें।

आर्य समाज के प्रधान तथा लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् पं. प्रियव्रत दास इंजीनियर ने सभी का आभार प्रकट करते हुए कहा कि उड़ीसा में प्रचार करने के लिए वैदिक साहित्य को उड़िया भाषा में प्रकाशित कराना अत्यन्त आवश्यक है। उन्होंने बताया कि वे खुद लगभग 40 पुस्तकों का उड़िया भाषा में अनुवाद कर प्रकाशित करवा चुके हैं तथा कई पुस्तकें अंग्रेजी भाषा में भी प्रकाशित करवाई गई हैं जो प्रचार कार्य में उपयोगी सिद्ध हो रही हैं।

माता सन्नो देवी ने भी उड़िया भाषा में अपना उपदेश दिया। इस अवसर पर बहन रश्मि अग्रवाल, आचार्य वासुदेव व्रती, आचार्य सुदर्शन देव व्रती, आचार्य प्रज्ञा गुरुकुल तनराणा जिला गंजाम, श्रीमती विनोदनी पाण्डया आदि ने भी अपने विचार रखे। आचार्य सुदर्शन देव व्रती जी ने यज्ञ का ब्रह्मत्व संभाला और अपने उपदेश भी देते रहे, उनके साथ उनके गुरुकुल हरिपुरा के ब्रह्मचारी भी वेद पाठ के लिए उपस्थित थे। उत्सव की व्यवस्था में आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री विकास पाण्डया, श्री योगेन्द्र उपाध्याय, श्री यज्ञ प्रकाश दास, डॉ. गोपाल चन्द्र दास, श्रीमती संश्रुता दास एवं अन्य कार्यकर्ताओं का भी विशेष सहयोग रहा। स्वामी नारदानन्द, श्री जय भगवान, स्वामी अभेदानन्द, आचार्य शरदचन्द्र आदि की भी उपस्थिति से कार्यक्रम की शोभा बनी हुई थी। कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। मंच का संचालन श्री यज्ञ प्रकाश दास, आचार्य सुदर्शन व्रती, डॉ. गोपाल चन्द्र दास आदि ने बड़ी कुशलता के साथ संभाला। सभी श्रोताओं तथा आर्य समाज के अधिकारियों ने सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का आभार जताया तथा पुनः आने का निमंत्रण देकर विदा किया।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी के भुवनेश्वर आगमन पर आर्यनेता श्री आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र, आर्य विद्वान् डॉ. वीरेन्द्र पांडा व उनके अन्य साथियों ने रोटेरी क्लब भुवनेश्वर के तत्वावधान में वेदों के महत्त्व पर संगोष्ठी का किया आयोजन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तरंग सदस्य डॉ. आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र के संयोजन में बौद्धि मंदिर भुवनेश्वर में एक संगोष्ठी का आयोजन रोटेरी क्लब भुवनेश्वर के तत्वावधान में किया गया। जिसमें सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी को वेदों के महत्व पर प्रकाश डालने के लिए मुख्य रूप से आमंत्रित किया गया। इस संगोष्ठी में स्वामी जी के अतिरिक्त उड़ीसा के प्रतिष्ठित विद्वान डॉ. वीरेन्द्र पांडा, रोटेरी क्लब के अध्यक्ष श्री शान्तनु पांणि आदि ने अपने विचार रखे।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का आयोजकों ने अंगवस्त्र भेंटकर स्वागत किया और स्वामी जी ने रोटेरी क्लब के प्रधान श्री शान्तनु पांणि को सम्मानित करते हुए आशीर्वाद प्रदान किया। संगोष्ठी को सम्बोधित करते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने वैदिक संस्कृति का निष्कर्ष परोपकार को बताया और कहा कि मनुष्य जीवन की सार्थकता भी परोपकार में ही निहित है। उन्होंने कहा कि रोटेरी क्लब का दूसरा नाम परोपकार करने वाली संस्था है। रोटेरी क्लब समाज के निराश्रित लोगों की विविध तरीके से मदद करती है। अतः उसके कार्य अत्यन्त प्रशंसनीय हैं। रोटेरी क्लब के प्रधान श्री शान्तनु पांणि ने स्वामी जी से आग्रह किया कि आप वैदिक सिद्धान्तों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचाने का प्रयत्न करें इसमें हम आपका पूरा सहयोग करेंगे। इस अवसर पर मंच का संचालन डॉ. आर्य कुमार ज्ञानेन्द्र ने किया और डॉ. वीरेन्द्र पांडा का सारगर्भित व्याख्यान वेदों की महत्ता पर हुआ।

बलिदान दिवस 23 मार्च पर विशेष

देशभक्ति ही जिनकी इबादत थी - भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव

- मनोज जैन

23 मार्च, 1931 का वो काला दिन जिस दिन भगत सिंह, राजगुरू, सुखदेव तीनों को रात के अंधेरे में फांसी दी गई। शाम 4 बजे सभी बैरकों के कैदी अपनी–अपनी कोठरियों में बंद हो गये, सबकी हाजिरी हो चुकी थी। इन तीनों वीरों को कोठरियों के अंदर ही स्नान कराया गया वैसे इन्हें तीन बजे दिन में ही फांसी लगने की सूचना दी जा चुकी थी। इसी जेल में एक सिख चीफ वार्डन था – चतर सिंह जो सेना का भूतपूर्व हवलदार था। वह एक धार्मिक स्वभाव का तथा मधुरभाषी सिख था। जब चतर सिंह को यह ज्ञात हुआ कि भगत सिंह को फांसी दी जाने वाली है, तो वह शीघ्र भगत सिंह के पास पहुँचा और बोला , ''बेटा! अब तो आखिरी वक्त आ पहुँचा है मैं तुम्हारे बाप के बराबर हूँ। मेरी एक बात मान लो..... ।'

परमात्मा को याद नहीं करूँगा

'कहिए, क्या हुक्म है?' उसी मस्ती से हंसते हुए भगत सिंह ने पूछा। मेरी सिर्फ एक दरख्वास्त है कि आप इस आखिरी वक्त में वाहेगुरु का नाम ले लो और गुरुवाणी का पाठ करो। यह लो गुटका, तुम्हारे लिए लाया हूँ। चतर सिंह बोला। भगत सिंह ठहाका लगाकर हंसे और बोले, आप की इच्छा पूरी करने में तो मुझे कोई एतराज नहीं हो सकता था, अगर आप कुछ समय पहले कहते। अब जबकि आखिरी वक्त आ गया है, मैं परमात्मा को याद करूँ, तो वह कहेगा कि यह (भगतसिंह) बुजदिल है, तमाम उम्र तो इसने मुझे याद किया नहीं अब मौत सामने आने लगी तो मुझ याद करने लगा है। इसलिए बेहतर होगा कि जिस तरह मैंने पहले जिन्दगी गुजारी है, उसी तरह मुझे इस दुनिया से जाने दीजिए। मुझ पर यह इल्जाम तो कई लगायेंगे कि मैं नास्तिक था और मैंने परमात्मा पर विश्वास नहीं किया, लेकिन यह तो कोई नहीं कहेगा कि भगतसिंह बुजदिल और बेईमान भी था, आखिरी वक्त मौत को सामने देखकर उसके पांव लड़खड़ाने लगे थे।'

फांसी का आदेश

इस समय वह लिंकन का जीवन चरित्र पढ़ने में तल्लीन थे, तभी जेल के अधिकारी आ गये और बोले, सरदार जी फांसी का आदेश आ गया है, आप तैयार हो जायें, उनकी नजर किताब पर से नहीं हटी पढ़ते–पढ़ते वह बोले, ''रुको! एक क्रांतिकारी दूसरे क्रांतिकारी से मिल रहा है।'' थोड़ी देर तक किताब के उस भाग को पढ़ लेने पर उन्होंने किताब उछाल दी और बोले 'चलो' और वह कोठरी से बाहर आ गये।

काले कपड़े

फांसी के तख्ते की ओर ले जाने से पहले, जेल के अधिकारियों द्वारा इन तीनों वीरों, भगतसिंह, राजगुरु तथा सुखदेव से, जेल के नियमों के अनुसार, काले कपड़े पहनने को कहा गया, लेकिन भगतसिंह इसके लिए राजी न हुए और उन्होंने कहा, ''मैं चोर, लुटेरा, डाकू, खूनी या कोई मामूली अपराधी नहीं हूँ।' इस पर चीफ वार्डन तथा उप अधीक्षक की कुछ भी कहने की हिम्मत न हुई, अतः उन्होंने इस मामले में दरोगा अकबर खाँ से बात की। दरोगा अकबर खाँ उनके पास आया उसने उनसे मिन्नत की कि वे जीवन के अन्तिम समय में इस प्रकार का व्यवहार न करे तब भगतसिंह मान गये।

उनके चेहरे खिले हुए थे

तीनों क्रांतिकारी कोठरी से बाहर निकले। उन्होंने एक–दूसरे को देखा, तीनों आपस में गले मिले। तीनों हंस रहे थे, उनके चेहरे खिले हुए थे, गम का कोई भी निशान उनके चेहरों पर न था, वे सीना फुलाये हुए अकड़कर, मस्ती से झूमते हुए चल रहे थे, परन्तु जेल के उन अधिकारियों के चेहरों पर मुर्दानी जैसी छाई हुई थी। जो उन्हें ले जा रहे थे, उनके चेहरों पर दुःख और अवसाद की रेखाएँ साफ दिखाई दे रही थी। भगतसिंह बीच में थे और राजगुरु दाहिनी ओर थे तथा सुखदेव बाईं ओर। भगतसिंह की दोनों भुजाओं में अन्य दो साथियों की भुजाएं थी। तीनों ही मौत से एकदम बेखबर से लग रहे थे और झूम–झूमकर गा रहे थे –

दिल से निकलेगी न मरकर वतन की उल्फत।
मेरी मिट्टी से भी खुशबू–ए–वतन आयेगी।।

सारा माहौल गमगीन हो चला था, परन्तु इन देशभक्तों के चेहरों से एक विचित्र तेज चमक रहा था। तब भारत माता के ये लाड़ले सपूत, जेल के अधिकारियों एवं कर्मचारियों से घिरे हुए, बढ़ चले महाप्रयाण की ओर फांसी के फंदे को गले लगाने।

हथकड़ी नहीं लगाई गई

शाम 6.35 मिनट पर ये तीनों, फांसी दिये जाने वाली जगह पर पहुंच गये। उस समय जेल अधीक्षक, आई. जी. पुलिस, डिप्टी कमिश्नर लाहौर तथा आई. जी. जेल भी वहाँ उपस्थित थे। तीनों वीर बुलंद आवाज में नारे लगाने लगे – इंकलाब जिन्दाबाद,' अंग्रेजी साम्राज्यवाद का नाश हो, राष्ट्रीय झंडा ऊँचा रहे, ऊँचा रहे, डाउन–डाउन यूनियन जैक। इन नारों को जेल के अन्य कैदियों ने भी सुना, तब उन्होंने अनुमान लगाया कि इन महान क्रांतिकारियों की महाप्रयाण वेला आ गई है, अतः अपनी–अपनी कोठरियों से ही ऊँची–ऊँची आवाजों में इन नारों को दोहराकर ही उन्हें अपनी श्रद्धांजलि दी। जब तीनों फांसी के तख्ते के पास पहुँचे, तो फांसी के नियमों के अनुसार डिप्टी कमिश्नर वहां पर खड़ा था। भगतसिंह तथा उनके साथियों को हथकड़ी नहीं लगाई थी, क्योंकि जेलर ने उन्हें पहले ही कह दिया था कि उन्हें हथकड़ी नहीं लगाई जाये तथा मुँह पर काला कंटोप न चढ़ाया जाये। जेलर इनकी अंतिम इच्छा को मान गया था, किन्तु इस समय उन्हें देखकर डिप्टी कमिश्नर यकायक सहम गया, तब जेलर मोहम्मद अकबर ने उन्हें सारी बात बताई और विश्वास दिलाया कि वे कुछ नहीं करेंगे।

फांसी के तख्ते पर चढ़ने से पहले भगतसिंह ने अंग्रेज डिप्टी कमिश्नर को सम्बोधित करते हुए कहा, मजिस्ट्रेट। तुम भागयशाली हो, जो तुम्हें आज यह देखने का अवसर मिला है कि भारतीय क्रांतिकारी किस तरह प्रसन्नता से अपने सर्वोच्च आदर्शों के लिए मौत को भी गले लगा सकते हैं।

आदर्श पर अडिग भगतसिंह

निःसंदेह जीवन के अंतिम क्षणों में भी इस प्रकार के आदर्श पर अडिग रहने वाले भगत सिंह की बात को सुनकर, मजिस्ट्रेट प्रभावित हुए बिना नहीं रह सका होगा। मजिस्ट्रेट से इतना कहने के बाद, वह फांसी के तख्ते पर चढ़ गये। तीन फंदे टंगे हुए थे। यहां भी तीनों उसी क्रम से बीच में भगतसिंह दाहिनी ओर राजगुरु तथा बाईं ओर सुखदेव खड़े हो गये। तीनों ने फिर गरजती आवाज में नारे लगाये – इंकलाब जिन्दाबाद साम्राज्यवाद मुर्दाबाद तीनों ने फंदे की ओर देखा, मुस्कराये, उसे चूमा और गले में डाल लिया, जैसे रणभूमि में जाने के लिए फूलों की माला डाल रहे हों। भगत सिंह ने जल्लाद से फंदों को ठीक कर लेने को कहा। शायद उसने यह शब्द अपने जीवन में पहली बार सुने थे। साधारण अपराधियों के तो तख्ते पर चढ़ने में ही पैर लड़खड़ाने लगते हैं, परन्तु भगत सिंह फंदा ठीक करने को कह रहे थे। जल्लाद ने फंदे ठीक किये। चर्खी घुमाई। तख्ता हटा और ये तीनों वीर मातृभूमि की बलिवेदी पर शहीद हो गये। भारत भूमि की आजादी के लिए एक चमकता हुआ सूर्य सदा–सदा के लिए अस्त हो गया।

रात में फांसी

सरकारी तार के अनुसार यह फांसी शाम 7 बजे दी जानी थी। श्री मन्मथनाथ गुप्त ने लिखा है कि यह फांसी 7.15 मिनट पर दी गई। कुछ दूसरी पुस्तकों में यह समय 7.30 बजे अथवा 7. 33 मिनट लिखा है। यहां विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि सामान्य तौर पर फांसी सुबह दी जाती है, जबकि भगत सिंह के मामले में इस नियम का पालन नहीं किया। उन्हें रात में फांसी दी गई। फांसी के बाद व्यक्ति का मृत शरीर उसके घरवालों को सौंप दिया जाता है, किन्तु इन महान क्रांतिकारियों के घर इस बात की सूचना भी नहीं दी गई कि उन्हें फांसी दी जा रही है। इससे अधिक जालिमाना हरकत और क्या हो सकती है?

दीवारों पर पोस्टर

अंग्रेज सरकार ने अपनी ओर से दूसरी सुबह केवल एक औपचारिकता पूरी करने के लिए जनता के लिए यह सूचना दी। लाहौर के जिलाधीश की ओर से दीवारों पर 24 मार्च को निम्नलिखित पोस्टर चिपकाये गये, जनता को सूचना दी जाती है कि भगतसिंह, राजगुरू और सुखदेव के शव, जिन्हें कल 23 मार्च को शाम के समय फांसी दी गई थी, जेल के बाहर सतलुज के तट पर ले जाये गये और वहां सिखों तथा हिन्दुओं के रीति–रिवाजों के अनुसार उनका दाह संस्कार कर दिया गया और उनकी अस्थियों को नदी में डाल दिया गया। ●

'वैदिक सार्वदेशिक' पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशन का स्थान	: दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड, (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-02
प्रकाशन की अवधि	: साप्ताहिक
प्रकाशन का समय	: प्रति बृहस्पतिवार
मुद्रक का नाम	: प्रो. विट्ठलराव आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हां
मुद्रक का पता	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002
सम्पादक का नाम	: प्रो. विट्ठलराव आर्य
क्या भारत का नागरिक है	: हां
सम्पादक का पता	: पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम-पते जो समाचार-पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1 प्रतिशत से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	: सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दयानन्द भवन, 3/5, आसफ अली रोड (रामलीला मैदान), नई दिल्ली-110002

मैं प्रो. विट्ठलराव आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण, जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

प्रो. विट्ठलराव आर्य, सम्पादक, प्रकाशक व मुद्रक

स्वास्थ्य चर्चा

डायबिटीज में फल

वैसे तो डायबिटीज में भी आप एक आम स्वस्थ इंसान की तरह अलग–अलग प्रकार के फलों का सेवन कर सकते हैं। लेकिन डायबिटीज के मरीजों को केले, अंगूर, आम, लीची और सेब जैसे फलों से परहेज करने की सलाह दी जाती है। ऐसा इन फलों में मौजूद कार्बोहाइड्रेट यानी फ्रक्टोज और सुक्रोज के कारण ब्लड में शुगर के स्तर में इजाफा के कारण होता है। लेकिन फल शरीर में जरूरी विटामिन, मिनरल, एंटी–आक्सीडेंट और फाइबर की आपूर्ति करते हैं। इसलिए डायबिटीज के मरीजों को नियमित रूप से कम से कम फल को अपने आहार में जरूर शामिल करना चाहिए। आइए डायबिटीज के लिए उपयोगी कुछ ऐसे ही फलों की जानकारी लेते हैं।

एक सेब रोज खायें और स्वस्थ जीवन पायें :– सेब को एक नकारात्मक कैलोरी आहार माना जाता है क्योंकि इसके पाचन में अधिक मात्रा में कैलोरी की आवश्यकता होती है। सेब में पेक्टिन की मात्रा अधिक होती है, जो कि डायबिटीज के मरीज के लिए डिटाक्सीफाइ की तरह काम करता है। इसके अलावा सेब में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट कोलेस्ट्रॉल के स्तर को कम करने और रोग प्रतिरोधक क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है।

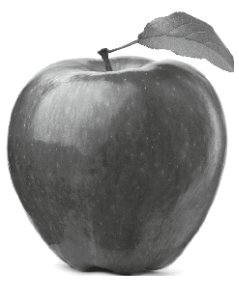

चेरीज और बेरीज :– यह मधुमेह रोगियों के लिये बहुत ही स्वास्थ्यवर्द्धक माना जाता है। इन मीठे और खट्टे फलों में विशेष प्रकार का केमिकल एन्थोसाइनिन पाया जाता है। यह केमिकल न सिर्फ चेरी को गहरा रंग प्रदान करता है बल्कि शरीर में इन्सुलिन की मात्रा को नियंत्रित रखता है।

ग्रेपफ्रूट यानी स्वाद और फिटनेस साथ–साथ :& ग्रेपफ्रूट एक खट्टा फल है जो सम्पूर्ण पोषण के लिए बहुत अच्छा होता है। यह खट्टा फल आपके शरीर में वसा को बढ़ाने वाली इंसुलिन के स्तर को कम करता है। इनमें फाइबर भी प्रचुर मात्रा में होता है। विशेषज्ञों के अनुसार जो लोग बचपन से ही ग्रेप फ्रूट का सेवन करते हैं उनमें डायबिटीज का खतरा बहुत कम हो जाता है।

फाइबर युक्त फल स्ट्राबेरी :& घुलनशील फाइबर युक्त फल स्ट्राबेरी जल्दी पचने के कारण आंतों में आसानी से अवशोषित हो जाते हैं। विशेषज्ञों का भी मानना हैं कि फाइबर युक्त फल आंत को साफ रखने का काम करते हैं।

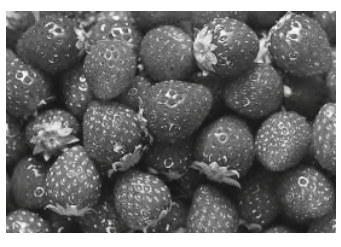

शुगर की मात्रा को संतुलित करे जामुन :– डायबिटीज रोगियों के लिए यह फल बहुत ही लाभकारी है। डायबिटीज के मरीज अगर जामुन के बीज को पीसकर एक गिलास पानी में डालकर पीयें। जामुन स्टार्च को शुगर में परिवर्तित नहीं होने देता और रक्त में ग्लूकोज के स्तर को भी संतुलित रखता है।

विटामिन सी से भरपूर कीवी :– इस फल में विटामिन सी की मात्रा अधिक होने के कारण ये शरीर को कई रोगों से निजात दिलवाने में मदद करता है। यह जितना अन्दर से गुणकारी है उतना ही इसके छिलके में भी बहुत से गुण होते हैं। डायबिटीज से परेशान लोगों के लिए कीवी काफी फायदेमंद होती है।

खरबूजे का सेवन :– डायबिटीज रोगियों के लिए खरबूजा एक औषधि की तरह काम करता है। इसमें ग्लाइसिमिक इंडेक्स ज्यादा होने के बावजूद भी फाइबर बहुत अधिक मात्रा में होता है, इसलिए यदि इसे सही मात्रा में खाया जाए तो अच्छा होता है।

अनानास :– अनानास में विटामिन और मिनरल की भरपूर मात्रा होती है। जैसे विटामिन ए और सी, कैल्शियम, पोटेशियम और फास्फोरस भी इसमें मौजूद होते हैं। यह पैनक्रियाज में बनने वाले रस को नियंत्रित करता है जो पाचन क्रिया में आगे मददगार होते हैं। पैनक्रियाज में नियंत्रण के कारण हम डायबिटीज जैसी बीमारी से भी सुरक्षित रह सकते हैं।

औषधि है नाशपाती :& नाशपाती में सेब की तरह औषधीय गुण पाए जाते हैं। नाशपाती में बहुत अधिक मात्रा में फाइबर और विटामिन की मौजूदगी के कारण यह डायबिटीज रोगियों के लिए औषधि की तरह काम करता है। इससे मीठा खाने की तलब नहीं लगती है।

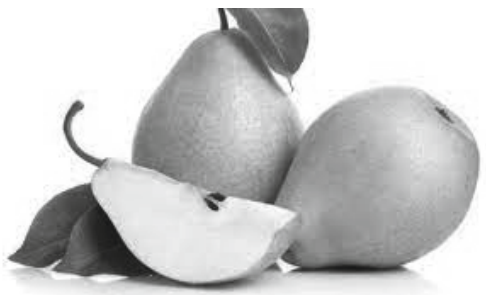

श्रीमती चन्द्रकांता जी का देहावसान

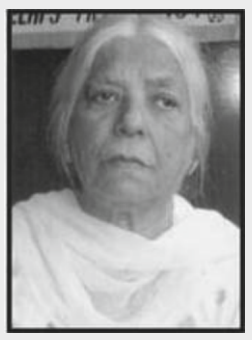

केन्द्रीय आर्य युवक परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं सार्वदेशिक सभा के उपप्रधान श्री अनिल आर्य जी के छोटे भाई श्री विजय कुमार सपरा जी की सासू माँ श्रीमती चन्द्रकांता आर्या जी का 84 वर्ष की आयु में शनिवार 26 फरवरी, 2022 को अचानक निधन हो गया है। श्रीमती चन्द्रकांता जी अपनी बेटी-दामाद (श्रीमती ज्योति सपरा धर्मपत्नी श्री विजय सपरा जी) के पास ही रहती थीं। वह धर्म पारायणा एवं आर्य समाज की विचारधारा से ओत-प्रोत थीं। श्री अनिल आर्य जी का तो पूरा परिवार सदैव आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में संलग्न रहता है। किसी भी परिवार में माता-पिता का आशीर्वाद उस परिवार के लिए सदैव एक वट वृक्ष की छाया के समान होता है। श्रीमती चन्द्रकांता जी के निधन से समूचे सपरा परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता श्रीमती चन्द्रकांता जी के निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

श्री किशनलाल आर्य जी के धर्मपत्नी का आकस्मिक निधन

आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत के कर्मठ कार्यकर्ता एवं पदाधिकारी श्री किशनलाल आर्य जी की धर्मपत्नी का विगत दिनों असामयिक निधन हो गया है। श्री किशनलाल आर्य जी सदैव आर्य समाज के प्रचार-प्रसार एवं संगठन को सुदृढ़ बनाने के कार्य में मध्य भारत सभा का बड़ी तन्मयता के साथ सहयोग करते रहते हैं। किसी भी गृहस्थ व्यक्ति के लिए समाजसेवा के कार्यों में अपना पूर्ण समय दे पाना तभी सम्भव हो पाता है जब उसे इस कार्य के लिए अपनी धर्मपत्नी एवं परिवार के अन्य सदस्यों का भी सहयोग प्राप्त होता रहा। मैं समझता हूँ कि आपको भी आर्य समाज के कार्यों को करने के लिए अपनी धर्मपत्नी जी का सहयोग अवश्य प्राप्त होता रहा होगा। अब उनके निधन से आपके जीवन में बहुत बड़ी रिक्तता आई है। इस दुःख की घड़ी में हम सब आपके सहभागी हैं। मुझे आशा एवं विश्वास है कि आप इस दुःखद घटना को परमात्मा की व्यवस्था समझकर समाज के कार्यों में अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे। आदरणीया माता जी के निधन से आपके परिवार की अपूर्णीय क्षति हुई है। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता उनके निधन पर गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री अशोक प्रबोध जी का असमय निधन

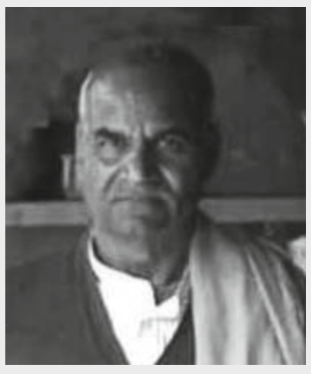

पश्चिमी उत्तर प्रदेश के प्रसिद्ध भजनोपदेशक श्री अशोक प्रबोध जी, तुगाना, बागपत (उ. प्र.) का दिनांक 7 मार्च 2022 (सोमवार) को प्रातःकाल लगभग 60 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे पिछले लगभग एक वर्ष से असाध्य रोग से पीड़ित थे। श्री अशोक प्रबोध जी ने आजीवन आर्य समाज के प्रचार-प्रसार के कार्यों में लगे। उन्होंने भजनों के माध्यम से गाँव-गाँव, नगर-नगर जाकर स्वामी दयानन्द जी के विचारों को पहुँचाने का कार्य किया करते थे। ऐसे कर्मठ भजनोपदेशक का असमय निधन निश्चित रूप से आर्य समाज एवं उनके परिवार की अपूर्णीय क्षति है। परन्तु ईश्वर की व्यवस्था को न चाहते हुए भी सभी को सहन करना ही पड़ता है। श्री अशोक जी के निधन पर सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के समस्त पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता गहरा दुःख प्रकट करते हुए अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं तथा परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्मा को शांति एवं सद्गति प्रदान करें।

सोशल मीडिया के माध्यम से स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ें

आर्य युवा सन्यासी व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान स्वामी आर्यवेश जी से जुड़ने के लिए इस लिंक पर क्लिक करें
www-facebook-com/SwamiAryavesh व फेसबुक पेज को लाइक करें व अन्य मित्रों को भी प्रेरित करें।
ई-मेल : aryavesh@gmail.com
Tel. :-011-23274771

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

आर्य समाज शिकागो, अमेरिका के मुख्य स्तम्भ श्री सुरेशपाल सिंह एवं डॉ. धीरजपाल सिंह की पूज्या माता किशना देवी की 25वीं पूण्य तिथि के अवसर पर भंवर भवन, सुभाषनगर, बड़ौत, उत्तर प्रदेश में 8 मार्च, 2022 को प्रातः 9 से 12 बजे तक विशेष यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया गया

क्षेत्र के सैकड़ों गणमान्य लोग यज्ञ में सम्मिलित हुए

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी का इस अवसर पर हुआ महत्त्वपूर्ण व्याख्यान

स्वामी आदित्यवेश व श्री अंकित शास्त्री ने यज्ञ सम्पन्न करवाया तथा धर्मेन्द्र आर्य एवं ब्र. संहसरपाल ने यज्ञ की पूरी व्यवस्था को संभाला

श्री सुरेशपाल सिंह एवं उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मंजू रहीं मुख्य यजमान

अमेरिका की सर्वाधिक सशक्त आर्य समाज शिकागो लैण्ड के मुख्य स्तम्भ, जुझारू नेता श्री सुरेशपाल सिंह की पूज्या माता श्रीमती किशना देवी की 25वीं पूण्य तिथि के उपलक्ष्य में 8 मार्च, 2022 को महिला दिवस के अवसर पर एक विशेष यज्ञ एवं प्रवचन का कार्यक्रम भंवर भवन, सुभाषनगर, बड़ौत में आयोजित किया गया जिसमें श्री सुरेशपाल सिंह तथा उनकी धर्मपत्नी श्रीमती मंजू मुख्य यजमान रहे। उनके बड़े भाई डॉ. धीरजपाल सिंह अस्वस्थ होने के कारण कार्यक्रम में सम्मिलित नहीं हो सके। किन्तु परिवार के अन्य सभी सदस्य उपस्थित रहे।

इस अवसर पर विशेष यज्ञ का संचालन स्वामी आदित्यवेश जी तथा श्री अंकित शास्त्री ने किया तथा व्यवस्था का दायित्व आर्य समाज छपरौली के कार्यकारी प्रधान श्री धर्मेन्द्र आर्य तथा आर्य युवक परिषद् के व्यायाचार्य श्री सहसरपाल आर्य ने संभाला।

सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी परिवार के निमंत्रण पर कार्यक्रम में विशेष रूप से सम्मिलित हुए। उनके अतिरिक्त राष्ट्रीय लोकदल व अन्य पार्टियों के अनेक गणमान्य नेता एवं कार्यकर्ता तथा क्षेत्र की आर्य समाजों के प्रमुख पदाधिकारी सैकड़ों की संख्या में कार्यक्रम में सम्मिलित हुए। स्वामी आर्यवेश जी ने अपने प्रवचन में मनुष्य के जीवन में माँ की भूमिका पर प्रकाश डालते हुए कहा कि माँ व्यक्ति का निर्माण करने वाली होती है। माता निर्माता भवति। माँ बच्चे की पहली गुरु होती है। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी ने भी सत्यार्थ प्रकाश में कहा है कि मातृमान, पितृमान, आचार्यवान, पुरुषो वेद। अर्थात् माँ बच्चे का पहला और पिता दूसरा तथा आचार्य तीसरा गुरु होता है। माँ बच्चे को लोरी देते हुए जब प्यार से उसे कहती है कि तुम विद्वान् बनों, बलवान बनों, धनवान बनों, धार्मिक और सदाचारी बनों तो ये लोरी संस्कार देने का कार्य करती हैं। बच्चा इन लोरियों को सुनकर प्रसन्न होता है। ऐसा लगता है जैसे माता बच्चे की भाषा और बच्चा माँ की भाषा समझती है। स्वामी जी ने महाभारत में यक्ष और युधिष्ठिर के संवाद में पूछे गये प्रश्न को भी उद्धृत किया कि पृथ्वी से भी भारी क्या है तो युधिष्ठिर ने इसका उत्तर देते हुए कहा था कि पृथ्वी से भी भारी माँ होती है। अर्थात् माँ की भूमिका मनुष्य के जीवन में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण है। माँ का ऋण दुनिया में कोई नहीं उतार सकता। क्योंकि माँ बच्चे को 9 महीने तक अपने पेट में सुरक्षित एवं संरक्षित रखती है और पूरी सावधानी के साथ उसका पालन–पोषण करती है। माता के इस ऋण से कभी कोई उऋण नहीं हो सकता। यज्ञ के उपरान्त सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने तथा उपस्थित सभी विद्वानों ने यजमान तथा यजमान परिवार को आशीर्वाद एवं शुभकामनाएं प्रदान की।

मुख्य यजमान श्री सुरेशपाल सिंह जी ने सभी आगन्तुक महानुभावों तथा विशेष रूप से स्वामी आर्यवेश जी तथा उनके साथियों का हार्दिक धन्यवाद किया और अपनी माता जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। विदित हो कि श्री सुरेशपाल सिंह जी के पूज्य पिता जी स्व. मा. भंवर सिंह जी क्षेत्र के एक प्रतिष्ठित एवं आर्य विचारों से ओत–प्रोत व्यक्तित्व थे। उन्होंने तथा उनकी धर्मपत्नी माता किशना देवी ने अपनी संतान को सुयोग्य बनाया जो आज देश–विदेश में अत्यन्त प्रतिष्ठा प्राप्त हैं। कार्यक्रम के उपरान्त प्रीतिभोज की सुन्दर व्यवस्था की गई थी, जिसे सभी ने ग्रहण किया।

शुभ सूचना ओ३म् शुभ सूचना

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित

ऋषिवर दयानन्द सरस्वती द्वारा विरचित अद्भुत और अनुपम कालजयी ग्रन्थ

सत्यार्थ प्रकाश

1100/– रुपये में उपलब्ध है

बड़े साईज में उपलब्ध

हिन्दी के एक बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ छोटे साईज का अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश मुफ्त में उपलब्ध है।

स्वामी दयानन्द सरस्वती जी द्वारा लिखित कालजयी ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' को आप अपने आर्य समाज, स्कूल, कॉलेज में रखें तथा इष्ट मित्रों एवं नव-दम्पत्तियों को भेंट करके पढ़ने के लिए प्रेरित करें।

बड़े साईज का सत्यार्थ प्रकाश बढ़िया कागज तथा सुन्दर बाईंडिंग के साथ तैयार कराया गया है जिसे बिना चश्मे के भी पढ़ा जा सकता है।

हिन्दी के बड़े सत्यार्थ प्रकाश के साथ जो अंग्रेजी का सत्यार्थ प्रकाश दिया जा रहा है वह भी सुन्दर कागज तथा आकर्ष बाईंडिंग में तैयार कराया गया है

20X30 का चौथा साईज

उपरोक्त पुस्तक को मंगाने के लिए नीचे दिये गये दूरभाष नम्बर तथा ई–मेल आई.डी. पर बुक कराकर मंगा सकते हैं। डाक से मंगाने पर डाक व्यय का अतिरिक्त खर्च देना होगा।

–: प्रकाशक :–

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, "दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002
दूरभाष – 011–23274771, 011–42415359, मो.:–9868211979, 8218863689
ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वेबसाइट : www.vedicaryasamaj.com
वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।